

[Mr. Deputy-Speaker]

procedure is not there, how can I allow you? (Interruption) This will be coming again I hope and you can have your full say. Kindly co-operate.

SHRI GULAM MOHAMMAD BAK-SHI : I will not ask the Prime Minister; but I beg of you to ask the Home Minister to make a statement today.

SHRI TENNETI VISWANATHAN (Vishakhapatnam) : Do I take it that a statement will be made today ?

MR. DEPUTY-SPEAKER : I have told the Minister of Parliamentary Affairs to convey to the Minister of Home Affairs what the Members have expressed here.

SHRI TENNETI VISWANATHAN : And also to the Prime Minister.

SHRI GULAM MOHAMMAD BAK-SHI : Prime Minister is not concerned. It is the Home Minister who is concerned.

श्री शिव चन्द्र झा (मधुबनी) : वहां पर अब असेम्बली की बैठक चल रही थी और एकाएक गवर्नर ने उसको प्रोरोग किया है, यह संविधान पर एक कूठाराघात है। मैं समझता हूँ कि गृह मंत्री को इसके बारे में आज एक बक्तव्य देना चाहिये। यह शाम तक दे दिया जाना चाहिये। साथ ही साथ इस पर एक लम्बी बहस भी होनी चाहिये। मैं इसका समर्थन करता हूँ।

SHRI SHEO NARAIN (Basti) : Sir, I rise on a constitutional point. (Interruption) As my friend has said.. (Interruption) What is this* thing? (Interruption)

MR. DEPUTY-SPEAKER : That word will be expunged.

15 hrs.

SHRI SHEO NARAIN : The Assembly should have been adjourned *sine die*, then it could be prorogued.

After that President's rule will come. But instead of that, something else has been done. The Home Minister should come and explain the constitutional position. We are not concerned with Kashmir as such now. We are concerned with the constitutional point. I hope you will give a ruling from your on book which is in your hands.

15.02 hrs.

GENERAL BUDGET 1970-71—GENERAL DISCUSSION—Contd.

MR. DEPUTY-SPEAKER : Shri Raghuvir Singh Shastri may continue his speech.

श्री रघुवीर सिंह शास्त्री (बागपत) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं कल कह रहा था कि सरकार को देश के गांवों और कृषि की समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए।

आज कृषि-उपज के मूल्यों के उतार-चढ़ाव की समस्या ने एक बड़ा विकराल रूप धारण कर लिया है। हमारे देश में पिछले आठ वर्षों में धोक मूल्यों के सूचकांक के बढ़ने की दर 9 प्रतिशत वार्षिक रही है। मध्य नवम्बर, 1969 से जनवरी, 1970 के अन्त तक मूल्यों में जो वृद्धि हुई है उसका रेट 15 प्रतिशत वार्षिक है। परन्तु दूसरी ओर 1968-69 के मुकाबले में 1970 में, एक डेढ़ साल के बाद, कृषि की उपज, गुड़ और खंडसारी, का मूल्य 1/6 रह गया है आज अगर किसान छः गुना भी पैदा करता है और उसको मूल्य मिले उतना ही, तो उसको अपना कृषि-उत्पादन बढ़ने में उत्साह कैसे रहेगा ?

इस लिए मैं कहना चाहता हूँ कि सरकार को एक स्थायी कृषि मूल्य आयोग की स्थापना करनी चाहिए, जिसमें किसानों का समुचित प्रतिनिधित्व होना चाहिए। टर्म्स आफ रेफरेंस के रूप में ये तीन निर्देशक सिन्धात उस आयोग के सामने रखे जायें।